Written by कुमार सौवीर
Sunday, 16 June 2013 10:36

□□□□□, □□□□ □ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□

: □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ : □□□-□□□□ □□ □□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ : □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ :

□□□□□ □□□□□

□□□□□□□ :डॉक्टर रजिवी धर्म और कर्म को अलग-अलग रखते हैं□ इसीलि□ सवालों के जवाब में बिल्कुल बेबाकी के साथ बताते हैं कि इस्लाम समेत कई समुदायों में शिशुओं में कराया जाना खतना मूत्र-रोगों की रोकथाम का विकल्प या समाधान-इलाज नहीं□ उनका कहना है कि यह पूरी तरह □क धार्मिक कृत्य है, और केवल इसलि□ मैं इसे डाक्टरी निदान-उपचार से जोड़ कर कोई सिद्धांत में कैसे बदल दूं? वे बताते हैं कि ज़ूरुस्थ, ईसाई, कई अफ्रीकी जातियों के साथ ही इस्लाम में भी पहले खतना खूब प्रचलित था□ लेकिन अब यह केवल इस्लाम तक ही सीमित हो कर रह गया है□ डॉक्टर रजिवी बताते हैं कि खतना या शिश्निव पर चढ़ी चमड़ी को ऑपरेट करने हटाने की प्रथा के बारे में लोगों का ख्याल है कि इससे यौनरोग नहीं होते, लेकिन अब तक कोई भी शोध यह साबित नहीं कर पाया□

उनका कहना है कि शोध के मामले में भारत बेहतर है, लेकिन पर्याप्त नहीं□ जरूरत है कि पथरी पर और मसाना के कैंसर पर शोध हो□ बहुत से रोगों के कारणों का तो हमें पता तक नहीं है□ पचास फीसदी से ज्यादा तो पथरी के रोग हैं□ □ड्स पर शोध की भी बेहद जरूरत है□ लेकिन यह काम भारत और पाकिस्तान दोनों को मिलजुल कर करना चाहि□□ इंटीग्रेटेड रिसर्च होनी चाहि□□

डॉक्टर रजिवी कहते हैं कि राजनीतिक समस्याओं के बीच हम भूल ही गये कि सन 1931 के बाद से इस क्षेत्र में ठोस शोध हु□ ही नहीं□ हमें यह ध्यान रखना चाहि□ कि हम सब मूलत□ □क ही हैं□ हमारा शरीर, बीमारी, समस्या□ं और दिल तथा दिमाग □क जैसा ही है□ अब तो बच्चों तक में स्टोन मिल रहे हैं□ तो भइया, हम मुल्कों के नेता अपनी राजनीति करते रहें इसमें किसी को कोई ऐतराज नहीं है□ लेकिन जिन पर राजनीति पर कर रहे हो, उनके सेहत का तो ध्यान देते रहो□ जनता ही नहीं बची तो राजनीति कैसे पनपेगी□

खतना तो सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान है, रोगों का इलाज नहीं

Written by कुमार सौवीर
Sunday, 16 June 2013 10:36

डॉक्टर रिजवी के दिल-दिमाग में काशी का विछोह अभी भी कचोटता रहता है। वे कहते हैं कि लगता है कि जैसे काशी के बिना मैं अधूरा ही रहूंगा। जिन्दगी भर। मैं कैसे भूल सकता हूं काशी और गंगा को, जहां पर मैंने इंसानियत का पहला सबक सीखा। वे कहते हैं कि काशी में एक अजीब सी लाजवाब और निहायत ही दिलकश कशिश है। हालांकि पचास सालों में पहले के हालात लगभग पूरी तरह बदल चुके हैं, लेकिन यह शहर मुझे यहीं खींच लाता है। आज जितनी संकरी सड़कें यहां हैं, पहले नहीं थीं। चलना आसान था। गंगा साफ थी। हम सीधे चुल्लू में लेकर गंगा का पानी पीते थे। पढने के लिए घाटों पर जाते थे। क्या शांति थी तब। अक्सर वहां बिस्मिल्ला खान अपनी शहनाई का रियाज भी करते थे। गंगा के नाम पर वे बहुत भावुक हो उठते हैं-यह तो पहचान है बनारस की। इसे गंदा मत करिये प्लीज।

हिंदुस्तान से उनका नाता टूटा नहीं है। वे आज भी 2-3 साल बाद काशी और जौनपुर आते हैं। और वहां पूरा वक्त मरीजों के साथ ही बिताते हैं।

डॉक्टर सैयद अदीबुल हसन रिजवी पर प्रकाशित रिपोर्ट के अगले अंक को देखने के लिए कृपया क्लिक करें :- गंगा तो पहचान है बनारस की, इसे गंदा मत करिये प्लीजः प्रो रिजवी

यदि आप वाराणसी की विभूतियों वाली सीरीज को देखना-पढ़ना चाहें तो कृपया क्लिक करें :- लीजेंड्स ऑफ बनारस

2 / 2